ISSN: 0973-0583

सीखने की प्रक्रिया का अवलोकन

मनोज कुमार सिंह

शोधार्थी, शिक्षा शास्त्र विभाग, सांई नाथ विश्वविद्यालय, रॉची, झारखण्ड (भारत)

डॉ0 शीला सिंह

अनुसंधान पर्यवेक्षक, शिक्षा विभाग, सांई नाथ विश्वविद्यालय, रॉची, झारखण्ड

शोध सार

रूपवान, नौजवान, धनवान, उत्तम कुलवान व्यक्ति भी यदि शिक्षा से उपेक्षित है, तो लोग उससे अज्ञानतावश सम्पर्की तो बन जाते है, लेकिन सुगंधविहीन किंशुक फूल के समान (जिसे लोग सुन्दरता के कारण तो ले लेते है, परन्तु सुगंध न होने के कारण उसे फेंक देते है।) अपने से दूर फेंक देते है। अर्थात् शिक्षा मनुष्य में सर्वोत्तम गुणों का विकास करती है, सब कुछ रहने पर भी यदि मनुष्य शिक्षा से विहीन है तो वह इस पृथ्वी पर भार स्वरूप है। सीखने का सशक्त माध्यम शिक्षा ही है। सीखने को सरल, बोधगम्य और जीवनपयोगी बनाने में शिक्षा की अहम् भूमिका होती हैं।

शब्द कुंजी: कुलवान, सुगंध, सर्वोत्तम, बोधगम्य, उपेक्षित, सशक्त

प्रस्तावना:

सीखना एक निरन्तर चलने वाली सार्वभौमिक प्रक्रिया है। मानव जन्म से ही सीखना प्रारंभ कर देता है तथा मृत्यु तक कुछ न कुछ सीखता ही रहता है। परिस्थिति, इच्छा तथा आवश्यकतानुसार सीखने की गति आगे-पीछे होती रहती है। सीखने के लिए कोई स्थान विशेष निश्चित नहीं होता, व्यक्ति कही भी, किसी भी समय, कुछ भी सीख सकता है। सीखने को अधिगम भी कहते हैं। सीखने का मानव जीवन में सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान है। व्यक्ति जो भी व्यवहार करता है अथवा नहीं करता है, उसका अधिकांश भाग सीखने से अथवा सीखने की प्रक्रिया से प्रभावित रहता है। वास्तव में सीखना मानव जीवन की सफलता की कुंजी है। सीखने के फलस्वरूप ही व्यक्ति अपने व्यवहार का परिष्कार करता है। सीखना अथवा अधिगम एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसे न केवल शिक्षा मनोविज्ञान में अपितु मनोविज्ञान की समस्त शाखाओं में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। वास्तव में शिक्षा प्रक्रिया का एक आवश्यक तथा महत्वपूर्ण अंग सीखना तथा सिखाना है।

सीखने का संम्प्रत्यय: सीखना तो वैसे एक सामान्य बोलचाल में प्रयुक्त होने वाला शब्द है तथा लगभग सभी व्यक्ति 'सीखने' शब्द के अर्थ के बारे में कुछ न कुछ अवश्य समझते है। परन्तु मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से इस प्रश्न पर विचार करना उपर्युक्त होगा कि 'सीखने' अथवा अधिगम शब्द से वास्तव में क्या अभिप्राय है? नि:सन्देह अधिगम से अभिप्राय अनुभवों तथा प्रयासों के द्वारा व्यवहार में परिवर्तन लाने की प्रक्रिया से होता है। परन्तु अधिगम अर्थात् सीखना शब्द का वास्तविक अर्थ मनोवैज्ञानिकों द्वारा प्रस्तुत की गयी परिभाषाओं के अवलोकन से अधिक स्पष्ट हो सकेगा। इसलिए अधिगम की कुछ परिभाषाएँ आगे दी जा रही है।

क्रो एवं क्रो के अनुसार -''आदतों ज्ञान तथा अभिवृत्तियों का अर्जन ही अधिगम है।''

गिल्फोर्ड के अनुसार-''व्यवहार के कारण व्यवहार में आया कोई भी परिवर्तन अधिगम है।''

स्किनर के अनुसार- ''अधिगम व्यवहार में उत्तरोत्तर अनुकूलन की एक प्रक्रिया है।''

उपरोक्त परिभाषाओं के अवलोकन, विश्लेषण तथा व्याख्या करने पर स्पष्ट होता है कि सीखने की प्रक्रिया में निम्न बातें शमिल रहती है।

* सीखना किसी प्रक्रिया का केवल परिणाम न होकर स्वयं में एक प्रक्रिया भी है।

* सीखने की प्रक्रिया सदैव उद्देश्यपूर्ण होती है जो व्यक्ति को समायोजन एवं अनुकूलन के लिए तैयार करती है।
* सीखने का क्षेत्र अत्यन्त विशाल है, इसमें मानव के व्यवहार से सम्बन्धित सभी क्षेत्र यथा-ज्ञानात्मक, भावात्मक तथा मनोचालक समाहित रहते है।
* सीखना व्यवहार में परिवर्तन की प्रक्रिया है, लेकिन बीमारी, थकान, संवेगात्मक स्थिति, मादक द्रव्यों के सेवन आदि के कारण व्यवहार में उत्पन्न होने वाले परिवर्तनों को अधिगम में शामिल नहीं किया जाता।
* सीखना सदैव सकारात्मक नहीं होता, इसलिए सीखना कभी-कभी नकारात्मक भी होता है।
* सीखना सदैव नूतन नहीं होता, पहले के सीखे हुए ज्ञान का निषेध करना भी सीखना हो सकता है।
* सीखने की प्रक्रिया सर्वकालिक, सार्वभौमिक व सतत् होती है अर्थात् सभी जीवधारी सभी कालों में सीखते है तथा सीखना किसी आयु, लिंग, भेद, जाति, प्रजाति विशेष तक सीमित नहीं होता।
* सीखना लगभग स्थायी प्रकृति का व्यवहार परिवर्तन होता है, अर्थात् एक बार सीखी गयी बातें काफी समय तक याद रहती है।
* सीखने की प्रक्रिया तथा उसके परिणाम अभ्यास, प्रशिक्षण तथा अनुभव पर आधारित होता है।
* सीखने में केवल परम्परागत विधियाँ ही नहीं वरन् नूतन विधियाँ भी समाहित हो सकती है।

उपरोक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि व्यापक अर्थो में सीखना शब्द का प्रयोग व्यक्ति के व्यवहार में अनुभव,अभ्यास तथा प्रशिक्षण से आने वाले सभी प्रकार के परिवर्तनों एवं परिमार्जनों को इंगित करने के लिए किया जाता है। अधिगम की प्रक्रिया को अच्छी तरह समझने के लिए इसकी विशेषताओं को भली-'भाँति ढंग से समझना आवश्यक है। प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक 'मैककाव' के अनुसार सीखने की प्रक्रिया की निम्नलिखित प्रमुख विशेषताएँ होती है।

* सीखना व्यवहार में सतत परिवर्तन है, जो जीवन पर्यन्त चलता है।
* सीखना सर्वांगींण है। मानव व्यवहार के सभी पक्षों में सीखने की प्रक्रिया चलती है।
* सीखने में व्यक्ति सम्पूर्ण रूप से (शारीरिक, मानसिक, भावात्मक आदि)शामिल रहता है।
* सीखना अधिकांशत: व्यवहार के संगठन में स्थायी परिवर्तन है।
* सीखना विकासात्मक प्रकार का होता है।
* सीखना प्रोत्साहन की प्रतिक्रिया होती हैं।
* सीखना सदैव उद्देश्यपरक होता है।
* सीखना व सीखने में रूची परस्पर सम्बन्धित होती है।
* सीखना तैयारी व अभिप्रेरणा पर निर्भर करता है।

सीखने के प्रकार- सीखने को अनेक प्रकारों में विभक्त किया गया है। जैसे- सीखे गये कार्य की प्रकृति के आधार पर सीखने को तीन प्रकार होती है :

1. शाब्दिक रूप से सीखना (शब्द भण्डार, भाषा कौशल तथा भाषायी विषयवस्तु पर आधारित विषय वस्तु को सीखने से है।

2. गत्यात्मक रूप से सीखना (शरीर के विभिन्न अंगों के संचालन तथा शारीरिक कौशलों में निपुणता अर्जित करने से है।)

3. समस्या समाधान द्वारा सीखना (जीवन में आने वाली नवीन समस्याओं के समाधान के तरीके सीखना।) सीखने (अधिागम) को कभी-कभी यान्त्रिक अधिगम, सार्थक अधिगम, तार्किक अधिगम, खोजपरक अधिगम, अन्वेषण अधिगम, पृच्छा अधिगम, सृजनशील अधिगम, सूचना संसाधन अधिगम, जैसे भागों में बाँटा जा सकता है। क्योंकि अधिगम की प्रक्रिया को शैक्षिक उद्देश्यों के परिप्रेक्ष्य में तीन क्षेत्रों यथा- संज्ञानात्मक क्षेत्र, भावात्मक क्षेत्र तथा चेष्टात्मक क्षेत्र में विभक्त किया जा सकता है।

1. संज्ञानात्मक अधिगम (शिक्षार्थी द्वारा विभिन्न तथ्यों का ज्ञान, सूचना व अन्य बौद्धिक कौशलों का अर्जन)
2. भावात्मक अधिगम (व्यक्ति के दृष्टिकोण, मूल्य भावों तथा संवेगों के द्वारा सीखने से होता है।)
3. चेष्टात्मक अधिगम (भौतिक तथा गामिक नियन्त्रण के द्वारा विभिन्न कौशलों को सीखने से होता है।)

शिक्षण स्तर के आधार पर अधिगम (सीखने को) तीन प्रकारों में बाँटा जा सकता है:-

1. स्मृति अधिगम- (सरल, प्राथमिक अधिगम, विचारहीन, रहन्त स्मरण)

2. अवबोध अधिगम (मध्यवर्ती अधिगम, समझ एवं बोध की क्षमता, तार्किक व्यवहार का अनुप्रयोग)
3. चिन्तन स्तर अधिगम (सर्वाधिक उच्चतम अधिगम, सृजनशील क्षमता, समस्या समाधान क्षमता, विचारयुक्त)

सीखने को प्रभावित करने वाले कारक

सीखने की प्रक्रिया अनेक कारको से प्रभावित हो सकती है, सीखने को प्रभावित करने वाले कुछ कारकों का वर्णन इस प्रकार है-

* **पूर्व अधिगम** - बालक कितनी शीघ्रता से अथवा कितनी अच्छी तरह से सीखता है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि वह पहले से क्या सीख चुका है। नवीन अधिगम की प्रक्रिया शून्य से प्रारंभ नहीं होती अपितु बालक द्वारा पूर्व अर्जित ज्ञान से प्रारंभ होती है। बालक के ज्ञान की आधारशिला जितनी मजबूत एवं व्यापक होती है, उसके ज्ञान की प्रक्रिया उतनी ही सुचारू ढंग से चलती है।

* **विषयवस्तु** - सीखने की प्रक्रिया में सीखी जाने वाली विषयवस्तु की प्रकृति व मात्र का भी प्रभाव पड़ता है। कठिन व असार्थक बातों की अपेक्षा सरल व सार्थक बातों को बालक शीघ्रता व सुगमता से सीखता है।

* **शारीरिक स्वास्थ्य एवं परिपक्वता** - शारीरिक दृष्टि से स्वास्थ्य व परिपक्व बालक सीखने में रूचि लेते हैं, जिससे वे शीघ्रता से नवीन बातों को सीख लेते हैं, इसके विपरीत कमजोर, बीमार व अपरिपक्व बालक सीखने के कार्य में कठिनाई का अनुभव करते हैं।

* **मानसिक स्वास्थ्य**- मानसिक रूप से स्वस्थ व परिपक्व बालकों में सीखने की क्षमता अधिक होती है। अधिक बुद्धिमान बालक कठिन बातों को शीघ्रता से तथा सरलता से सीख लेता है । इसके विपरीत मानसिक रोगों से पीड़ित या कम बुद्धि वाले बालक प्राय: मन्दगति से नवीन बातों को सीख पाते हैं।

* **अधिगम की इच्छा**- सीखने की प्रक्रिया इच्छा पर भी निर्भर करती है यदि बालक में किसी बात को सीखने की दृढ़ इच्छा शक्ति होती है तो वह प्रतिकूल परिस्थितियों में भी उस बात को सीख लेता है। इसके विपरीत यदि कोई बालक किसी बात को सीखना ही नहीं चाहता तो उसे जबरदस्ती नहीं सिखाया जा सकता।

* **अभिप्रेरणा**- अभिप्रेरणा का अधिगम की प्रक्रिया में सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान है। यदि बालक सीखने के लिए अभिप्रेरित नहीं होता तो वह सीखने के कार्य में रूचि नहीं लेता है तथा नयी बातों को नहीं सीख पाता है। अत: अध्यापकों को चाहिए कि सिखाने से पहले बालकों को सीखने के लिए प्रेरित करें।

* **थकान**- थकान सीखने की प्रक्रिया में बाधा उत्पन्न करती है। थकान के कारण बालक पूर्ण मनोयोग से सीखने की क्रिया में शामिल नहीं हो पाता। थकान होने के कारण उसका ध्यान केन्द्रित नहीं हो पाता, जिससे सीखने में संशय होता है।

* **वातावरण**- अधिगम की प्रक्रिया पर वातावरण का भी प्रभाव पड़ता है। शान्त, सुविधाजनक, सहज, नेत्रप्रिय, हरियालीयुक्त, उचित प्रकाश तथा वायु वाले वातावरण में बालक प्रसन्नता से व एकाग्रचित्त होकर सीखता है। इसके विपरीत शोरगुल वाले अनाकर्षण तथा असुविधाजनक वातावरण में बालक के सीखने की प्रक्रिया मन्द हो जाती है।

* **सीखने की विधि**- सीखने की विधि का भी सीखने की प्रक्रिया के संचालन में महत्वपूर्ण स्थान है। कुछ विधियों से सीखा गया ज्ञान अधिक स्थायी होता है। खेल विधि या स्वयं करके सीखना जैसी मनोवैज्ञानिक व आधुनिक विधियों से ज्ञान शीघ्रता व सुगमता से प्राप्त हो जाता है, तथा इस प्रकार का ज्ञान स्थायी होता है।

सीखने की विधियाँ

स्वयं करके सीखना
अनुकरण विधि द्वारा सीखना
निरीक्षण करके सीखना
प्रयास एवं त्रुटि द्वारा सीखना
परीक्षण करके सीखना
पूर्ण विधि द्वारा सीखना
वाद-विवाद विधि द्वारा सीखना
अंश विधि द्वारा सीखना
वाचन विधि द्वारा सीखना
अन्तराल विधि द्वारा सीखना
सतत् विधि द्वारा सीखना
प्रेक्षण विधि द्वारा सीखना

सीखने में अभिप्रेरणा का महत्वः

सीखने की प्रक्रिया मे अभिप्रेरणा का महत्वपूर्ण स्थान है। अभिप्रेरणा वास्तव में प्राणी की वह आन्तरिक स्थिति है अथवा तत्परता की स्थिति है जो उसे किसी विशिष्ट प्रकार के व्यवहार को प्रारंभ करने, उसे निश्चित दिशा देने तथा बनाये रखने के लिए प्रेरित करती है। अभिप्रेरणा लक्ष्य निर्देशित होती है। यह व्यक्ति में ऊर्जा परिवर्तन लाती है तथा व्यवहार में निरन्तरता बनाये रखती है यहाँ पर सीखने में अभिप्रेरणा की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करना आवश्यक है। वस्तुतः अभिप्रेरणा का उचित प्रयोग करके शिक्षक सीखने सिखाने की प्रक्रिया को अधिक अच्छे ढंग से सम्पादित कर सकता है। अभिप्रेरित बालक ज्ञानार्जन के लिए तत्पर होते है तथा वे शीघ्रता, सरलता, सहजता तथा सुगमता से सीख सकते हैं। इसके विपरीत अ-अभिप्रेरित बालकों की प्रायः नई बातों को सीखने में रूची नहीं होती तथा वे नवीन बातों को सीखने में कठिनाई का अनुभव करते है। अध्यापक आवश्कतानुसार विभिन्न प्रकार के अभिप्रेरकों का उपयोग करके बालकों को अपने शिक्षा के उद्देश्य प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करता है। निःसन्देह शिक्षा प्रक्रिया में अभिप्रेरणा की उपयोगिता स्वस्पष्ट ही है। कक्षा शिक्षण के अतिरिक्त अन्य शैक्षिक परिस्थितियों में भी छात्रों के व्यवहारों को नियन्त्रित करने के कार्य में भी अभिप्रेरणा महत्वपूर्ण योगदान कर सकती है। आदत तथा चरित्र निर्माण में भी अभिप्रेरणा सहायक सिद्ध होती है। बालकों को शिक्षा के महत्व को बताकर उनके भावी जीवन में शिक्षा की आवश्यकता तथा भूमिका स्पष्ट की जा सकती है जिससे वे अपने लिए शिक्षा की आवश्यकता को महसूस कर सकें तथा शिक्षा प्राप्ति की ओर आधिकाधिक अभिप्रेरित हो सकें। पढ़ते समय पाठ्यवस्तु पर ध्यान केन्द्रित कराने में भी अभिप्रेरणा के सम्प्रत्यय का सकारात्मक ढंग से उपयोग किया जा सकता है। अभिप्रेरणा पाकर बालकों में अध्ययन करने की रूचि तथा गति दोनों बढ़ जाती है, इसलिए शिक्षा प्रदान करते समय शिक्षक द्वारा छात्रों को ज्ञान प्राप्ति की ओर अभिप्रेरित करना चाहिए। छात्रों में अभिप्रेरणा जितनी अधिक होती है, सीखने की प्रक्रिया के सफल होने की संभावना भी उतनी अधिक होती है।

निःसन्देह अभिप्रेरणा के द्वारा बालकों के व्यवहार में वांछित परिवर्तन काफी सहजता व शीघ्रता से लाए जा सकते हैं। पुरस्कार, प्रशंसा, निन्दा, भर्त्सना जैसे कृत्रिम अभिप्रेरकों का उचित ढंग से उपयोग करके शिक्षक, बालकों के व्यवहार को वांछित दिशा में निर्देशित कर सकता है। छात्रों को अभिप्रेरित करने की दृष्टि से निम्न बातें महत्वपूर्ण हो सकती है।

* **सीखने की इच्छा**- अभिप्रेरणा प्रदान करने का पहला कदम बालकों में सीखने की इच्छा जागृत करना है। सीखने की प्रक्रिया तब ही सरल, शीघ्र तथा स्थायी होती है, जब व्यक्ति सीखने का इच्छुक होता है। इच्छा एक अत्यन्त साधारण परन्तु अत्यन्त प्रभावी अभिप्रेरक है, शिक्षक इसका उपयोग सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को गति प्रदान करने में अत्यन्त सहजता से कर सकता है।

* **सीखने में आवेश्टन** - आवेश्टन से अर्थ किये जाने वाले कार्य से लगाव का अनुभव करने उसमें सफलता प्राप्त करने की इच्छा से होता है। आवेश्टन की स्थिति में व्यक्ति उस कार्य में मानसिक रूप से समाविष्ट हो जाता है। यदि बालकों का लगाव सीखने की प्रक्रिया में होता है तब वे सरलता, शीघ्रता तथा सहजता से नवीन बातों को सीख लेते है।

* **आकांक्षा स्तर**- आकांक्षा स्तर व्यक्ति के जीवन लक्ष्यों की ऊँचाइयों को इंगित करता है। व्यक्ति अपने आकांक्षा स्तर के अनुरूप ही प्रयास करता है। अध्यापक छात्रों के आकांक्षा स्तर को यथासंभव ऊँचा निर्धारित करा कर उन्हें अधिकाधिक अध्ययन करने के लिए अभिप्रेरित कर सकते हैं।

* **प्रतियोगिता**- शिक्षक को अपने छात्रों में स्वस्थ प्रतियोगिता की भावना उत्पन्न करनी चाहिए। इससे छात्र अधिक समय तक तथा अधिक परिश्रम से कार्य करते हैं। परन्तु ईर्ष्या, क्रोध, घृणा आदि पर आधारित प्रतिद्धन्दिता को कदापि सराहनीय नहीं माना जा सकता। प्रतियोगिता के फलस्वरूप बालक कठिन कार्यो को भी करने के लिए अभिप्रेरित होता है।

* **प्रशंसा**- प्रशंसा एक सकारात्मक अभिप्रेरणा है। यदि किसी छात्र के अच्छे कार्यों की प्रशंसा की जाती है तो उसके द्वारा उस प्रकार के कार्यो को करने की संभावना बढ़ जाती है। वास्तव में अपने से बड़े तथा मान्य व्यक्तियों

के द्वारा की जाने वाली प्रशंसा बालक को वांछित कार्य को अधिक अच्छे ढंग से करने के लिए उत्तेजित करती है।

* **निन्दा**- निन्दा एक निषेधात्मक अभिप्रेरक है। निन्दा को एक प्रकार का सामाजिक व मानसिक उत्पीड़न माना जाता है। निन्दा के भय से बालक अपने व्यवहार में सुधार लाते हैं। सामाजिक परिस्थितियों में की जाने वाली निन्दा बालकों के ऊपर गहरा प्रभाव छोड़ती है, परन्तु निन्दा करते समय उचित परिस्थितियों, उचित स्थान तथा उचित अवसर का ध्यान रखना चाहिए।

* **पुरस्कार**- पुरस्कार प्रशंसा का अधिक प्रखर तथा भौतिक रूप है। किसी वस्तु, धन, छूट, उपहार शील्ड आदि के रूप में दिये जाने वाले पुरस्कार प्राय: बालकों के लिए अत्यन्त शक्तिशाली अभिप्रेरक सिद्ध होते हैं। किन्तु अभिप्रेरणा के रूप में पुरस्कारों का प्रयोग सावधानी पूर्वक करना चाहिए। ऐसा न हो जाये कि बालक पुरस्कार प्राप्ति के लिए अनुचित तरीकों का प्रयोग करके सफलता अर्जित करने की ओर प्रवृत्त हो जाये।

* **दण्ड** - दण्ड भी निन्दा की तरह एक निषेध ात्मक अभिप्रेरक है जो निन्दा से अधिक प्रखर तथा प्राय: शारीरिक या आर्थिक होता है। दण्ड से अर्थ शारीरिक पीड़ा से है, जिससे बालक भविष्य में उन कार्यो को न करने से बचे। ऐसा दण्ड वास्तव में भय पर आधारित होता है। इसलिए इसका प्रयोग बड़ी सावधानी से करना चाहिए। कभी-कभी अर्थदण्ड का भी प्रयोग करना चाहिए।

* **प्रतिष्ठा** - प्रतिष्ठा प्राप्त करना प्रत्येक व्यक्ति की इच्छा होती है। वह चाहता है कि अपने समूह में अधिकाधिक प्रतिष्ठापूर्ण स्थान प्राप्त करें तथा इसके लिए वह सतत चेष्टा करता रहता है। छात्र भी कक्षा में प्रतिष्ठा प्राप्त करना चाहते हैं। प्रतिष्ठा के सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न छात्रों की अपेक्षाएँ भिन्न-भिन्न होती है। प्राय: बालक अपनी सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के अनुरूप कक्षा में प्रतिष्ठा प्राप्त करना चाहता है। प्रतिष्ठा प्राप्ति की इच्छा बालकों को परिश्रम करने के लिए अभिप्रेरित करती है।

बालकों के सीखने में अध्यापक की भूमिका - शिक्षक, छात्र के व्यवहार निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है। वह जिस तरह पढ़ाता है तथा कक्षा में छात्रों की व्यवस्था जिस प्रकार करता है। उसका छात्र के सीखने पर प्रभाव पड़ता है। एक अधिनायकवादी शिक्षक छात्रों के सीखने में आक्रोश तथा शत्रुता का सृजन करेगा जबकि लोकतांत्रिक शिक्षक सीखने के लिए सहभागी वातावरण का सृजन करेगा।

शिक्षक सीखने को निम्नलिखित प्रकार से प्रभावित करता है।

* शिक्षक का उद्देश्य ऐसी मान्यताओं का विकास करना है, जिससे बालक अच्छा नागरिक बन सके। इन उद्देश्य की प्राप्ति के लिए निश्चित पाठ्यक्रम द्वारा वह शिक्षण कार्य करता है। अभिप्रेरणा के द्वारा छात्रों में अनुशासन की भावना विकसित करता है। वह छात्रों के चरित्र तथा व्यक्तित्व के विकास के प्रति सचेत रहता है।

* शिक्षक अभिप्रेरणा के द्वारा छात्रों में किसी ज्ञान या कार्य के प्रति अभियोग्यता का विकास करता है। वह छात्रों में पाठ्यविषयों के प्रति रूची को विकसित करने में सहायता करता है तथा विभिन्न प्रकार के कार्यो को करने के लिए प्रेरित करता है।

* अधिगम की सफलता के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षक छात्रों में चिंतन का विकास करें। चिंतन के विकास को इस प्रकार प्रोत्साहित किया जाये कि यह उसकी आदत बन जाये और छात्र आसानी से सीख सकें।

* शिक्षक अपने विषय ज्ञान से छात्रों में सीखने की क्रिया को प्रभावित करता है। इसलिए शिक्षक को शिक्षण के विषय में पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। शिक्षक को अध्यापन के समय इस बात की जानकारी होनी चाहिए कि विभिन्न विषयों में उसे कितना अंतरण देना है।

* शिक्षक छात्र के अधिगम को तेज करने के लिए छात्रों के अभिवृत्ति के विकास को ध्यान में रखता है। अंतरण की योग्यता के विकास के लिए उसके लिए आवश्यक है कि वह छात्रों में ज्ञान का अन्य परिस्थितियों में उपयोग करने पर ध्यान दें। इस क्रिया के द्वारा छात्र की अभिवृत्ति का विकास हो जाता है और वह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में ज्ञान का उपयोग करने में सफल हो जाता है।

* छात्रों के अधिगम को उन्नत बनाने के लिए शिक्षक उत्तम विधियों का सहारा लेता है। वस्तुत: छात्र का चिन्तन शिक्षक द्वारा अपनायी गई शिक्षण-विधि पर निर्भर करता है। बालक का अधिगम मनौवैज्ञानिक विधियों से अधिक प्रभावित होता है क्योंकि इससे छात्र की रूची बढ़ जाती है और समस्या का समाधान शीघ्र होता है। शिक्षण के रोचक होने से अंतरण अधिक सफल होता है।

* छात्रों में सीखने को तीव्र करने के लिए पाठयक्रम को उसके अनुकूल होना चाहिए। इसलिए आज-कल पाठ्यक्रम छात्रों की आवश्यकता एवं रूची के अनुसार बनाया जाता है। पाठ्यक्रम के द्वारा भावी जीवन की आवश्यकताओं को पूरा करना आवश्यक है, तभी वह पाठ्यक्रम सार्थक होगा और छात्र का अधिगम भी सफल होगा।

* सीखने की सफलता के लिए छात्रों में अंर्तदृष्टि का होना आवश्यक है। इसलिए शिक्षक अंतदृष्टि के विकास पर जोर देता है। इसके लिए शिक्षक को छात्र के समक्ष सम्पूर्ण समस्या को रखना चाहिए एवं अंर्तदृष्टि का उपयोग करने के लिए भरपूर अवसर देना चाहिए।

* बालक के अधिगम को प्रेरित के लिए विषय का सामान्यीकरण होना आवश्यक है। इसलिए अध्यापक को शिक्षण-सामाग्री का सामान्यीकरण करके ही पढ़ाना चाहिए। इससे छात्र का चिंतन बढ़ जाता है।

निष्कर्ष:

शिक्षा मनोविज्ञान का संभवत: सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रकरण अधिगम (सीखना) है। अध्यापकों का मुख्य कार्य छात्रों में सीखने को शीघ्र, सरल, सहज तथा स्थायी बनाने में सहायता करना है। अधिगम को सीखना भी कहते है। सीखने से तात्पर्य अनुभव, अभ्यास तथा प्रशिक्षण के द्वारा व्यक्ति के व्यवहार में होने वाले परिवर्तन या परिमार्जन से है। सीखना वास्तव में एक ऐसी प्रक्रिया है जो निरन्तर चलती रहती है। सकारात्मक सीखने को बढ़ाने तथा नाकारात्मक सीखने को कम करने का प्रयास किया जाता है। सीखने को अनेक कारक प्रभावित कर सकते है। पूर्व अधिगम, विषयवस्तु की प्रकृति, शारीरिक स्वास्थ्य व परिपक्वता, मानसिक स्वास्थ्य व परिपक्वता, बुद्धि, सीखने की इच्छा, प्रेरणा, उत्साह, थकान, वातावरण, सीखने की विधि कुछ ऐसे प्रमुख कारक है जो सीखने की प्रक्रिया को प्रभावित करते है।

करके सीखना, निरीक्षण करके सीखना, परीक्षण करके सीखना, वाद-विवाद करके सीखना, वाचन विधि, अनुकरण विधि प्रयास एवं त्रुटि विधि, पूर्ण विधि, अंश विधि,सतत विधि, अन्तराल विधि, आदि सीखने की विभिन्न विधियाँ है। ये विधियाँ परस्पर एक दूसरे से पूर्णतया अलग नहीं है। पाठ्य सामाग्री, शारीरिक व मानसिक क्षमता, वातावरणीय परिस्थितियों के अनुरूप इनमें से कोई एक या मिलीजुली विधि अपनायी जा सकती है। सीखने की प्रक्रिया में अभिप्रेरणा की महत्वपूर्ण भूमिका रहती हैं। अत: परिवार व विद्यालय दोनों में बालकों को सीखने के लिए अभिप्रेरित करने हेतु हरसम्भव प्रयास किये जाने चाहिए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:

1. मंगल एस0 के0, शिक्षा मनोविज्ञान, पी0एच0आई0 लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, संस्करण-2013, पृष्ट संख्या-225
2. वही, पृष्ट संख्या- 226
3. बेवसाइट- https://www.mppoardonline.com.
4. पाठक पी0डी0, शिक्षा मनोविज्ञान, श्री विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, संस्करण-2010, पृष्ट सं0-180
5. माथुर एस0एस0, शिक्षा मनोविज्ञान, श्री विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, संस्करण-2010, पृष्ट, सं0-194
6. वहीं, पृष्ट सं0-195
7. भटनागर, सुरेश, शिक्षा मनोविज्ञान, आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ, उ0 प्र0, संस्करण-2010, पृष्ट सं0-97
8. वहीं, पृष्ट सं0-98
9. मालवीय राजीव, शिक्षा का दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य, शारदा पुस्तक भवन, प्रयागराज, उ0 प्र0, संस्करण-2018, पृष्ट सं0-26
10. सिंह अरूण कुमार, शिक्षा मनोविज्ञान, भारती भवन, नई दिल्ली, संस्करण-2010, पृष्ट सं0-302
11. गुप्ता एस0 पी0/गुप्ता अल्का, उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान सिद्धान्त एवं व्यवहार, शारदा पुस्तक भवन, प्रयागराज, उ0प्र0, संस्करण-2018, पृष्ट सं0-406
12. वहीं, पृष्ट सं0- 407
13. वहीं, पृष्ट सं0-415
14. वहीं, पृष्ट सं0-417

❖❖❖